गोमुख व यक्ष यक्षी का मनोहारी अंकन है। यहां की प्रतिमाओं की मुखाकृति गोल हैं। ठोड़ी में उभार है। भौंह पलकों तथा नासिका अंकन तीखा है। ओठ वक्ष और कटि प्रदेश को लावण्य युक्त तथा मांसल बनाया गया है।

चालुक्य शासक मुख्यत: वैष्णव धर्म को मानने वाले थे। धर्म सहिष्णुता के कारण उनके काल में बादामी तथा अयहोल में वैष्णव धर्म, तथा शैव, शाक्त मूर्तिया का अंकन हुआ यहां दशावतार की मूर्तियां, विष्णु के शेषासीन, गरुड़ासीन तथा वैकुण्ठनारायण स्वरुप भी उकेरा गये। नटेश, रावणानुग्रह, गंगाधर, कल्याण सुन्दर मूर्तियां उल्लेखनीय हैं। चालुक्य मूर्तिया बलिष्ठ, विशाल आकार और इनकी शरीर योजना सामाजस्य पूर्ण तथा लयात्मक हैं। ये मूर्तियां शान्त सन्तुलित ओजस्वी ऊर्जावान हैं।

दक्षिणी भारत के मन्दिरो के बहुत ऊंचे गोपुरो की परम्परा पाण्डय शासन काल की देन है। मन्दिर की चारो दिशाओ में एक-एक गोपुर बनाया जाता है। गोपुर को देवता गन्धर्व, गरुड, सर्प, मकर शार्दुल आदि आकृतियों से सज्जित किया जाता है। देवी प्रतिमाओ में प्रमुख रुप में काली, पार्वती, सीता, दुर्गा, लक्ष्मी, महाकाली, सरस्वती, मानसा, देवी, तारा देवी, आदि हैं। देवताओं एव अवतारों में शिवजी, शिव और पार्वती विष्णुजी, ब्राह्म गणेश, नृत्यरत गणेश राम, बुद्ध, बोधिसत्व मैत्रय, अर्धनारीश्वर, कल्याण सुन्दरम्, नृत्य गोपाल, वेणुगोपाल, हनुमान जी, विष्णु जी, देवी व भू-देवी के साथ पत्नियां के साथ, नरसिंह कार्तिकेय शिवकंकाल, कालीय मर्दन आदि मूर्तियां प्रमुख हैं। इन सबमें अपना निजत्व एवं विशेषता पाई जाती है। शिव, पार्वती और स्कन्द का मूर्त परिवार इसकाल की अनोखा कृति है। इसमें शिव का योग और पार्वती का आकर्षक सौन्दर्य अद्भुत रुप से फूट पड़ा है।

अन्य मूर्तियां - यू तो ....

डा० पूर्णिमा वशिष्ठ

4 May 2020

Sub- भारतीय मूर्तिकला का इतिहास
कोड नं० -2002 T

दक्षिण भारत से प्राप्त अन्य धातु मूर्तिशिल्प :—

नटराज शिव की प्रतिमाओं के अतिरिक्त दक्षिण भारत में कास्य पीतल तांबे व अष्टधातु से अन्य देवी देवताओं की प्रतिमाओं का निर्माण हुआ जो राजकीय संग्रहालय मद्रास राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली, तंजौर कला दीर्घा इन्डियन म्यूजियम कोलकाता व पटना संग्रहालय में स्थित है।

चोल कला में प्रस्तर मूर्तियो से अधिक प्रधानता धातुमूर्तियों के निर्माण की रही। ये मूर्तियां मधुच्छिष्ठ विधि से बनायी गयी हैं। चोल मूर्तियो को भारतीय धातु मूर्तियो में उत्कृष्ट कहा जा सकता है। शिव के नटराज या नटेश स्वरूप की प्रतिमाओं का असीमित संख्या में निर्माण हुआ। यहां पर शिव के सौम्य तथा अनुग्रहकारी स्वरूपों की मूर्तियो के साथ विष्णु वाराह नरसिंह कृष्ण तथा शक्ति आदि की मूर्तियो का निर्माण हुआ। नटराज शिव की सर्वोत्तम मूर्तियो में नागेश्वर मन्दिर तथा तंजौर तथा गंगैकोण्डचोलपुरम के वृहदीश्वर मन्दिर से प्राप्त मूर्तियाँ उल्लेखनीय हैं। शिव की नृत्य मुद्रा में स्टॉप्ट, जीवन की गतिविधियां तथा लयात्मकता - गति का सन्तुलन अभिव्यक्ति होता है।

11-13 वी शती ई० के बीच प्रमुखत, शिव, विष्णु लक्ष्मी व अन्य देवी देवताओं के साथ जैन तीर्थकरो की मूर्तियां परमार कला के क्षेत्र विदिशा उज्जैन धारा, मंदसौर, दशपुर भोजपुर, चित्तौड उदयपुर आदि हैं इस शैली में प्रतिमा लक्षण सिद्धान्तों को प्रमुखता प्रदान की गयी है। आकर्षक भंगिमाओं को सूक्ष्मता से उकेरा गया है। और आभुषणों सहित, शरीर रचना में कैलाव के साथ इकहरे बदन वाली लम्बी आकृतियां बनी हैं।

इस काल की मूर्तियां इंदौर धार, उज्जैन भोपाल और ग्वालियर के संग्रहालयों में संग्रहीत हैं। आशापुरी व हिंगलाजगढ से प्राप्त दशावतार - ब्रह्मा शिव लक्ष्मी, विष्णु, की मनोहारी मूर्तियां विशेष उल्लेखनीय हैं। इनके साथ गणेश, चामुण्डा, गजलक्ष्मी अर्धनारीश्वर, गजासुर संहार, तथा जैन तीर्थकर की मूर्तियां भी प्राप्त हुई हैं। ऋषभ नाथ के लक्षण वृषभ का तथा

SHOT ON REDMI Y3
AI DUAL CAMERA

Scanned with CamScanner